2

पवित्र बाइबल, परमेश्वर का वचन

बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से होने का दावा करती है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। यूनानी वाक्यांश के अनुवाद ''परमेश्वर की प्रेरणा'' का मूल अर्थ है ''परमेश्वर के सांस से।'' सांसारिक लेखकों को कई प्रकार से ''प्रेरणा'' मिलती है उनमें सिद्धांत भी हो सकते हैं और घटित हुई घटनाएं भी, परन्तु बाइबल का दावा है कि इसकी प्रेरणा *स्वयं परमेश्वर* ने दी। पतरस, जो एक प्रेरित और नये नियम की कई पुस्तकों का रचयिता था, उसने लिखा कि बाइबल की भविष्यवाणियां ''मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुईं और भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे'' (2 पतरस 1:21)।

इस पाठ का उद्देश्य आपको आत्मा की प्रेरणा से मिली पुस्तक से परिचित करवाना है। इसमें बाइबल के स्रोत के ईश्वरीय होने के कुछ प्रमाणों को शामिल किया जाएगा, परन्तु इस अध्याय का मुख्य लक्ष्य इस अद्भुत पुस्तक में आपकी रुचि बढ़ाना है। बाइबल को पढ़कर और इसके उपदेशों को मानने से (याकूब 1:21-25), आपको समझ आने लगेगा कि क्यों इस अद्भुत पुस्तक ने युगों से लोगों पर अपना प्रभाव बनाए रखा है।

इस अध्याय में दी गई बातों को एक लेखक ने ''अद्भुत वचन के सात अजूबे'': इसकी प्राचीनता, आधुनिकता, विविधता, एकता, विषय, प्रभाव और सांत्वना के अजूबे कहा। बाइबल के अन्य आश्चर्यों का उल्लेख भी किया जा सकता था, जैसे कि इसकी ऐतिहासिकता और भौगोलिक यथार्थता और इसकी निष्पक्षता, परन्तु भजन संहिता की पुस्तक के लेखकों में से एक के साथ पुकारने के लिए कि, ''तेरी चितौनियां अनूप हैं''! (भजन संहिता 119:129क) ये सात ही काफी हैं।

इसकी प्राचीनता

बाइबल विश्वभर की सबसे पुरानी पुस्तकों में से एक है। साधारणत: पुस्तकों को बहुत पुराना होने का अवसर प्राप्त नहीं होता। ये बहुत नाज़ुक होती हैं। आग इन्हें जला देती है, पानी इन्हें घोल देता है, कीड़े इन्हें खा जाते हैं, और लापरवाह हाथों में ये फट जाती हैं।

पूरी बाइबल, लगभग दो हज़ार वर्ष पुरानी है। इसके कुछ भाग तो इससे भी दोगुने पुराने हैं, संसार की किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना इससे नहीं की जा सकती। बाइबल की आयु से ही इसके स्थायित्व और इसकी अनश्वरता का पता चल जाता है।

अति प्राचीन लेख पुराने नियम में मिलते हैं: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण। इनको मूसा के द्वारा लिखा गया था और इनमें मनुष्य के आरम्भ और आरम्भिक दिनों का वर्णन है। यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि आज मनुष्य के पास ये पुस्तकें अति प्राचीन सम्पूर्ण लेखों से मिली हैं!

इसे नष्ट करने के मनुष्य द्वारा किए जा रहे निरन्तर प्रयासों के बावजूद बाइबल इस प्राचीन काल में पहुंच गई है। बार-बार, इस धरती पर होने वाली अति शक्तिशाली सरकारों ने इस पुस्तक को मिटा डालना चाहा। इसे पढ़ने के जुनून में लोगों को लटकाकर मार दिया गया और इसे अपने पास रखने की सज़ा में उन्हें जला दिया गया।

इसके पन्नों का अध्ययन करने वाले लोगों पर अत्याचार की क्रूरता की सभी सीमाएं लांघ दी गईं परन्तु, आज पृथ्वी पर लिखी जाने वाली किसी भी पुस्तक की तुलना में बाइबल की सबसे अधिक प्रतियां उपलब्ध हैं।

तीसरी शताब्दी के अन्त में रोमी शासक डियोक्लेशियन ने आदेश दिया कि जिस भी व्यक्ति के पास बाइबल की प्रति पाई जाए, उसे मौत के घाट उतार दिया जाए। उसने एक कैदी के परिवार को भी अपनी आज्ञा का उल्लंघन करने की सूचना न देने पर मृत्यु दण्ड दे दिया। इस प्रकार निरंकुश रोमी शासक ने अपने पापमयी जीवन और अत्याचार को गलत बताने वाली रचना को ही मिटा देने का यत्न किया। दो वर्ष के बाद, डियोक्लेशियन ने डींग मारी, ''मैंने मसीही साहित्य को पृथ्वी पर से पूरी तरह मिटा दिया है।''

एक सदी के बाद रोमी शासक, कान्सटैंटाइन मसीहियत से प्रभावित हुआ और उसने अपने शासन में सभी कलीसियाओं के लिए नये नियम की प्रतियां बनाने की इच्छा की। उसने घोषणा की कि जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन की खोज करके उसके

अधिकारियों को देगा, उसे उचित पुरस्कार दिया जाएगा। चौबीस घण्टों के भीतर, उस शासक को बाइबल की पचास प्रतियां उपलब्ध हो गईं जबकि डियोक्लेशियन ने सोचा था कि उसने उन सबको नष्ट कर दिया है।

यद्यपि बाइबल को नाशवान सामग्री पर फीकी पड़ जाने वाली स्याही से ही लिखा गया, समय की लूटपाटों, प्रकृति की शक्तियों और मनुष्य के विनाशक षड्यंत्रों को चुनौती देते हुए बाइबल आज भी इस शताब्दी में हमारे पास है। इसके इतने लम्बे समय के इतिहास का श्रेय तो परमेश्वर की समयोचित चिन्ता को ही जाता है।

इसकी आधुनिकता

प्राचीन होने के साथ-साथ, बाइबल कई पहलुओं से आधुनिक पुस्तक जी है। हम पुरानी पुस्तकों से आशा नहीं करते कि उनमें आधुनिक शिक्षा मिल पाएगी। विज्ञान की दस वर्ष पूर्व की पाठ्य-पुस्तक अप्रचलित हो जाती है। शताब्दी पूर्व की पुस्तक के लिए जिज्ञासा होती है। 1700 में छपी, *सैलमन' स एंब्रयोलॉजी* में दिया गया औषधीय ज्ञान आज के डॉक्टर को हंसा-हंसा कर लोटपोट कर देगा। 1600 का *फार्माकौपिया लौण्डैन्सिस* तो इससे भी उपहासजनक लगता है; यदि कोई डॉक्टर इस प्रसिद्ध पुस्तक के अनुसार दवाई दे तो डॉक्टरी को नियन्त्रित करने वाले लोग उसे बन्दी बना दें!

केवल कुछ ही वर्षों में होने वाले इस अन्तर को दिखाने के लिए वनस्पति विज्ञान की लगभग 150 वर्ष पुरानी किताब की एक पंक्ति यहां प्रस्तुत है:

> इटली में एक जड़ी-बूटी उगती है... जिसमें शुद्ध श्वेत दुर्लभ सुगन्ध वाला एक फूल निकलता है, परन्तु इसमें यह अद्भुत गुण है: फूलों को गीले पत्थरों के नीचे रखकर छोड़ दिया गया, दस दिनों में वे ज़हरीले बिच्छू बन गए, जिनके डंक से मृत्यु हो जाती है।

आप कह सकते हैं, ''काम की बात करो। आखिर हमने पिछली डेढ़ शताब्दी में कितना कुछ सीख लिया है। आप पुरानी पुस्तकों से आशा नहीं कर सकते कि वे आपके मापदण्ड पर खरी उतरें।'' यही तो बात है। उदाहरण के लिए, मूसा ने, 3500 वर्ष पूर्व लिखा, परन्तु आप पाएंगे कि उसकी पुस्तक का आधुनिक विज्ञान और ज्ञान के साथ ज़रा भी टकराव नहीं है। सभी पुस्तकें ''बाइबल के वैज्ञानिक पूर्वज्ञान'' पर

यह ज़ोर देते हुए लिखी गई हैं कि प्रकृति-विज्ञान और अन्य वैज्ञानिक क्षेत्रों के आधुनिक तथ्य बाइबल के पन्नों पर मिल सकते हैं। इन तथ्यों में इस प्रकार के तथ्य शामिल हैं:

पृथ्वी गोल है (यशायाह 40:22; नीतिवचन 8:27)।
पृथ्वी अंतरिक्ष में लटकी हुई है (अय्यूब 26:7)।
अंतरिक्ष इतना विशाल है कि इसको मापा नहीं जा सकता अथवा तारों की गिनती नहीं हो सकती (उत्पत्ति 15:5; यिर्मयाह 33:22)।
समुद्रों में प्राकृतिक मार्ग हैं (जो आज तक नौ परिवहन के लिए प्रयोग किए जाते हैं) (भजन संहिता 8:8)।

इन वाक्यों में यह दावा नहीं है कि बाइबल कोई वैज्ञानिक पुस्तक है, बल्कि इनमें ज़ोर दिया गया है कि बाइबल के लेखकों ने विज्ञान से सम्बन्धित विषयों को छूकर उस समय के अन्य लेखकों के विपरीत वैज्ञानिक तथ्य से टकराव नहीं किया।

बाइबल की विशेषता के अति आकर्षक उदाहरण औषधि के क्षेत्र से हैं। यह उस दुनिया में लिखी गई, जिसके लोग आधुनिक स्वास्थ्य-विज्ञान या सेहत से सम्बन्धित बातों से अनभिज्ञ थे। पुराने नियम में मूसा को दी गई व्यवस्था में स्वच्छता, स्वास्थ्य रक्षा से सम्बन्धित, संगरोधता और रोगों को नियन्त्रित करने और रोकने के अन्य उपाय दर्ज किए गए।

उदाहरण के लिए, एक शल्यचिकित्सक के लिए शल्यक्रिया (ऑपरेशन) करते समय मास्क (मुखौटा) पहनना सामान्य प्रक्रिया है और जब कोई किसी ऐसे व्यक्ति के कमरे में जाता है, जिसे संक्रमण रोग हो तो वह मास्क (मुखौटा) पहन लेता है। क्यों? क्योंकि वह रोगाणुओं को फैलाना नहीं चाहता। वैज्ञानिकों द्वारा रोगाणुओं की खोज करने के तीन हज़ार वर्ष पूर्व, परमेश्वर ने मूसा को ये निर्देश दिए थे: ''और जिस में वह व्याधि हो उस कोढ़ी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे रहें, और वह अपने ऊपर वाले होंठ को ढांपे हुए अशुद्ध, अशुद्ध पुकारा करे'' (लैव्यव्यवस्था 13:45)।

एक अन्य आधुनिक चिकित्सकीय उन्नति खून चढ़ाना है। वर्षों पहले, लोगों का ''खून निकल जाने देना'' डॉक्टरी अज़्यास में सबसे अच्छा माना जाता था; कई लोगों की खून निकल जाने से मृत्यु हो गई। परन्तु, आज यह समझ में आ गया है कि शरीर में जीवन का स्रोत लहू ही है। अब उत्पत्ति 9:4 में मूसा के कथन पर चलें: ''पर मांस को प्राण समेत अर्थात *लहू* समेत तुम न खाना।'' अन्य शब्दों में मूसा का कहना था:

शरीर के प्राण लहू में हैं (लैव्यव्यवस्था 17:11-14 को भी देखें)।

बाइबल में डॉक्टरी ज्ञान की यथार्थता को कई पुस्तकें समर्पित की गई हैं। इनमें डॉक्टरी अज़्यास के विशाल दायरे को समेटा गया है। एक नमूना यहां प्रस्तुत है:

> पुरुष व स्त्री दोनों में ही जीवन का ''बीज'' है (उत्पत्ति 3:15; 22:18)।
> रोगी मनुष्यों या जानवरों के सज़र्क में आने के बाद अपने आप को और अपने कपड़ों को दूषण रहित कर देने में समझदारी है (गिनती 19:15-22)।
> स्वाभाविक मौत मरे जानवर को खाना हानिकारक है (लैव्यव्यवस्था 17:15)।

क्या यह आश्चर्जनक नहीं है? सबसे पुरानी पुस्तक हमारे पास है जो आज की इक्कीसवीं शताब्दी की डॉक्टरी की धारणाओं की तरह ही आधुनिक है।

बाइबल की आधुनिकता को इसके अलग-अलग सभी विषयों में दिखाया जा सकता है। क्या कोई यह दावा कर सकता है कि संसार ने इस पुस्तक के नैतिक मापदण्डों को त्याग कर विकास किया है? क्या इससे बढ़कर ज्ञान हमें कहीं और मिला है कि हम इसकी धारणाओं का त्याग कर सकें? नहीं। आधुनिक मनुष्य बाइबल की बुद्धि को बदल नहीं सका है; यदि यह संसार एक हज़ार वर्ष और अस्तित्व में रहता है तो, परमेश्वर का वचन तब इक्कत्तीसवीं शताब्दी में भी वैसा ही आधुनिक होगा जैसा यह इक्कीसवीं शताब्दी में है।

इसकी विविधता

जो कुछ हमने अब तक कहा, वह पर्याप्त रूप से अद्‌भुत होता यदि बाइबल केवल एक ही पुस्तक होती और एक ही विषय पर बात करती। परन्तु बात ऐसी नहीं है।

बाइबल विश्व में सबसे भिन्न पुस्तकों में से एक है। पहला, वास्तव में यह दो अंकों में है जिन्हें पुराना नियम और नया नियम कहा जाता है। इन दोनों में चार या पांच शताब्दियों की दूरी है। दूसरा, इन दोनों अंकों को आगे कई पुस्तकों में बांटा गया है- पुराने नियम में उन्तालीस पुस्तकें हैं और नये नियम में सत्ताइस। कुल मिलाकर इसमें छियासठ पुस्तकें हैं। तीसरा, ये छियासठ पुस्तकें चालीस से अधिक विभिन्न लेखकों के द्वारा लिखी गईं। चौथा, ये चालीस से अधिक लोग लगभग दो हज़ार वर्ष के काल में हुए हैं। अन्त में, इन लेखकों ने साहित्य के ज्ञात सभी विषयों से एक अधिक विषय

पर लिखा। यह ''एक अधिक'' वह विषय है जो किसी भी अन्य पुस्तक में नहीं मिलता अर्थात सच्ची भविष्यवाणी। यह क्षेत्र केवल परमेश्वर के पास है। बाइबल में सैकड़ों भविष्यवाणियां ठीक वैसे ही और सही-सही पूरी हो चुकी हैं। स्थानाभाव केवल कुछ ही उदाहरण देने की आज्ञा देगा:

राष्ट्रों से स बन्धित भविष्यवाणियां: इस्राएल के उदय, पतन, और राष्ट्रों के गिरने के बारे में कई भविष्यवाणियां की गईं। उदाहरणस्वरूप, व्यवस्थाविवरण 28:47-68 में इस्राएल के इतिहास का स्पष्ट चित्रण किया गया है। अश्शूर (देखिए यशायाह 10:12, 24, 25; 2 राजा 17:24; 18:13) और बाबुल (देखिए यशायाह 13; दानिय्येल 5:28) समेत कई अन्य राष्ट्रों, के बारे में भी भविष्यवाणियां थीं।

लोगों से स बन्धित भविष्यवाणियां : फारस के राजा कुस्त्रू की तरह (देखिए यशायाह 24:28; 45:1), राजा योशिय्याह के कामों के बारे में उसके जन्म के तीन सौ वर्ष पूर्व ही बता दिया गया (1 राजा 13:2; 2 राजा 23:15, 16)। अश्शूर के राजा सन्हेरीब की यरूशलेम पर कब्जा करने की अयोग्यता का उल्लेख करना भी उचित है (देखिए 2 राजा 19:32-35)।

मसीह से स बन्धित भविष्यवाणियां: पुराने नियम की लगभग आठ सौ भविष्यवाणियों में से, तीन सौ से अधिक भविष्यवाणियां यीशु मसीह पर ही केन्द्रित हैं। इस पुस्तक के अध्याय 4 में इनमें कई भविष्यवाणियों और उनके पूरा होने के बारे में बताया गया है।

बाइबल की विविधता प्रमाणित करती है कि यह परमेश्वर की ओर से है। विशेषकर यह इसलिए सही है क्योंकि अनेकता में हमें इसकी एकता मिलती है। पुस्तकों की इस पुस्तक में मानव जीवन और आध्यात्मिकता के किसी भी पहलू की अनदेखी नहीं की गई। यह मनुष्य के अस्तित्व की सैद्धांतिक और ईश्वरीय अगुआई की सभी अवस्थाओं के बारे में बताती है।

इसकी एकता

यदि बाइबल एक ही पुस्तक होती और एक ही लेखक ने इसे लिखा होता तो स्वाभाविक है कि हम इसके सभी भागों में समानता की आशा रखते। यदि यह एक ही विषय पर चालीस से अधिक व्यक्तियों द्वारा लिखी पुस्तक भी होती तो उनमें पूरी तरह सहमत होने की सम्भावनाएं बहुत ही कम होतीं। इसलिए यह दावा कि चालीस से अधिक व्यक्तियों ने भिन्न-भिन्न विषयों पर छियासठ पुस्तकें लिखीं, मन को स्तब्ध कर देता है। कोई कह सकता है, ''इतने अद्‌भुत कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने मिलकर बड़ी सावधानी से काम किया होगा।'' इतिहास गवाह है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ। इनमें से बहुत से लोगों ने एक दूसरे को कभी देखा भी नहीं। उनमें सदियों का अन्तर था और योजना बनाने या अपने लेखों को संशोधित करने का उन्हें अवसर नहीं मिला। उनके सामंजस्य का अवश्य ही कोई और कारण रहा होगा।

तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि बाइबल के सभी भागों और लेखकों में पूरी एकता और सहमति है। लोगों ने उनमें असहमति ढूंढने का यत्न किया परन्तु वे कहीं भी सफल न हो पाए। बाइबल एक पुस्तक है, पूरी तरह से एक।

उदाहरणार्थ, इसके दो मुख्य भागों, पुराना नियम और नया नियम पर विचार करें। यद्यपि इनमें दो अलग-अलग समूह के लोगों के लिए दो अलग-अलग वाचाएं अथवा समझौते हैं, फिर भी ये दोनों एक दूसरे के साथ बड़ी खूबसूरती से जुड़े हुए हैं। किसी ने कहा है, ''पुराने नियम में नया नियम छिपा हुआ है और नये नियम में पुराना प्रकट होता है।'' पुराना नियम *जड़* है, और नया नियम *फल* है।

आइए बाइबल की प्रथम और अन्तिम पुस्तक में कुछ तुलनाओं पर विचार करें:

1. उत्पत्ति का आरम्भ आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से होता है; प्रकाशितवाक्य नये आकाश और नई पृथ्वी की सृष्टि के साथ समाप्त होती है।

2. उत्पत्ति, प्रकाश के होने और सूर्य व चांद के बनाए जाने के बारे में बताती है; प्रकाशितवाक्य में मनुष्य के लिए उनकी सेवा का अन्त बताया गया है क्योंकि नए नगर (स्वर्ग) में, परमेश्वर और मेम्ने (यीशु) का प्रकाश है।

3. उत्पत्ति में, मनुष्य शैतान से मिलता है और हार जाता है। प्रकाशितवाक्य में, एक और युद्ध होता है; इस बार, शैतान को मात मिलती है और यीशु के द्वारा मनुष्य विजयी होता है।

4. उत्पत्ति में, मनुष्य को अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया जाता है,

जहां प्रथम पुरुष तथा स्त्री रहते थे; प्रकाशितवाक्य में वह फिर से परमेश्वर के साथ मिल जाता है।

5. अन्त में, उत्पत्ति की पुस्तक हमें यह बताती है कि मनुष्य ने जीवन के वृक्ष में से खाने के अधिकार को कैसे खोया– ताकि पाप अविनाशी न हो जाए। प्रकाशितवाक्य में, पाप से नाश हुए मनुष्य को जीवन के वृक्ष में से खाने का निमन्त्रण दिया जाता है ताकि वह सदैव जीवित रहे!

हां, इस पुस्तक की एकता अद्‌भुत है। इसकी एकता को देखकर, हम चकित रह जाते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि इसका लेखक परमेश्वर ही है।

इसका विषय

बाइबल की एकता तभी सम्भव है यदि एक मस्तिष्क की ही देखरेख में इसके विषयों को संकलित किया गया हो। क्योंकि कोई भी मनुष्य पन्द्रह से अधिक शताब्दियों के काल तक, जिसमें यह साहित्यिक कार्य हुआ, जीवित नहीं रह सकता था। इसलिए परमेश्वर को इसका लेखक कहा जाना उचित ही है। पतरस के मन में भी यही था जब उसने कहा, ''भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे'' (2 पतरस 1:21ख)।

फिर, एकता होने के लिए केवल एक लेखक का होना ही आवश्यक नहीं था, बल्कि *एक विषय* का होना भी आवश्यक था ताकि सब इकट्ठे हो सकें। इस पुस्तक का विषय क्या है? यह ''मनुष्यजाति की कहानी'' नहीं है, यद्यपि इस विषय का कारण मनुष्यजाति ने ही उपलब्ध करवाया। यह ''यहूदियों की कहानी'' नहीं है, यद्यपि इस विषय को तैयार करने में उनका योगदान स्पष्ट है। इस पुस्तक का विषय ''एक मनुष्य की कहानी'' है और वह *एक मनुष्य– यीशु मसीह है।*

सच ही कहते हैं कि बाइबल उस आने वाले के इर्द-गिर्द घूमती है। पुराने नियम का संदेश है ''वह *आ रहा* है।'' सुसमाचार वृत्तांतों का संदेश है, ''वह *यहां* है।'' नये नियम के शेष भाग का संदेश है ''वह *फिर आ रहा* है ।''

यदि हम बाइबल की हर पुस्तक को इस दृष्टिकोण से देखें कि वह यीशु के बारे में क्या प्रकट करती है तो यह एक दिलचस्प अध्ययन हो सकता है। ''उत्पत्ति में यीशु'', ''निर्गमन में यीशु'', ''लैव्यव्यवस्था में यीशु'' और इसी प्रकार इन पुस्तकों पर कई पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। उदाहरणार्थ:

यीशु उत्पत्ति 1 में है, क्योंकि ''सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ'' (यूहन्ना 1:3क)।

यीशु उत्पत्ति 3 में है, क्योंकि यह वही है जिसने बाद में ''उसका (स्त्री का) वंश'' बनना था और शैतान के सिर को कुचलना था (उत्पत्ति 3:15; गलतियों 3:16)।

यीशु उत्पत्ति 4 में है, जहां वह हाबिल के मेज़ने के बलिदान के रूप में पूर्व संकेत है (देखिए इब्रानियों 12:24)।

यीशु उत्पत्ति 6 में भी है, क्योंकि जहाज़ में बचाव, उसमें और उसके द्वारा मिलने वाले उद्धार का प्रतीक (सांकेतिक चिह्न) है। इस तरह हम और अध्यायों में यीशु के बारे में जान सकते हैं।

फिर, इस विषय को शब्द *यीशु मसीह* से आश्चर्यजनक एकता मिलती है। यीशु- छुटकारा देने वाला जो आने वाला था, मुक्तिदाता जो आ गया, और राजा जो फिर आएगा -छियासठ पुस्तकों के शब्दों को एकरूप पुस्तक में बांधता है।

इसका प्रभाव

संसार भर के पुस्तकालयों की सारी रचनाओं में से, मनुष्यजाति पर बाइबल का प्रभाव सबसे अधिक है। इसने इतिहास की धारा को ही बदल दिया, शासकों को ऊपर उठाया, विजय पाने वालों और राजाओं को उदास कर दिया। जिन्होंने इसके आदेशों को माना उन्हें आशिषें और सफलता प्राप्त हुई, इसके विरुद्ध युद्ध करने वाले मृत्यु और विनाश को प्राप्त हुए। बाइबल की कई और शक्तियां हैं, परन्तु आइए लोगों के जीवन को बदलने और उन्हें ऊंचा उठाने की इसकी शक्ति पर ध्यान दें।

कई वर्ष पूर्व, द्वीपों के एक समूह में असज्य लोगों की एक जाति रहती थी। जूलियस सीज़र (कैसर) की सेना के इतिहास में उन दिनों का वर्णन करती तस्वीर है जब ये लुटेरे नंगे होकर युद्ध करने जाते थे और खाली खोपड़ी से मृत शत्रु का लहू पीकर विजय की खुशी मनाते थे। केल्ट जाति के पुरोहितों की वेदियों पर मनुष्यों की बलि चढ़ाना साधारण बात थी। फिर कुछ बात हुई। मिशनरी अपनी जान को जोखिम में डालकर इन जंगली कबीलों में गए और वहां रहने वालों ने इसे स्वीकार कर लिया। समय बीतने पर, ये लोग सिकन्दर महान से बड़े शासक बने- ये द्वीप बर्तानवी द्वीप थे।

जहां कहीं भी बाइबल गई, वहां पर मनुष्यजाति का भला हुआ है। बाइबल में

परिवर्तित जीवनों की भरमार है। चुंगी लेने वाला बेईमान ईमानदार और दान करने वाला दानी बन गया (लूका 19:1-9)। एक खूनी निन्दक भी महान प्रेरित बन गया (प्रेरितों के काम 7:58; 8:1, 3; 22:4-21)। कई और उदाहरण भी दिये गये हैं।

परमेश्वर ने बाइबल की शक्ति द्वारा जो औरों के लिए किया है, उसे वह आपके जीवन में भी कर सकता है। यदि आप उसके वचन को पढ़ें और उसमें जीएं, तो वह आपको अपने पुत्र, यीशु मसीह के स्वरूप में बदल देगा।

इसकी सांत्वना

मनुष्य की सेवा में दूसरे हर क्षेत्र की तरह, सांत्वना देने में, बाइबल अद्वितीय, अभूतपूर्व और अनुपम है। न तो ऐसा विश्वसनीय प्रकाशन और कहीं है और न ही मिलेगा, जो कब्र के आगे भी मनुष्य को रास्ता दिखा सकता हो। बाइबल पाठक को उसके अपने अनन्त स्थान की आशा और भरोसा देती है और जब किसी प्रिय को मृत्यु अलग कर दे तो यह उसे सांत्वना देती है।

मृत्यु एक शत्रु है। मनुष्य की सज़्पूर्ण कविता और सोच का दर्शन इस डरावने और निराशाजनक तथ्य को कभी बदल नहीं सकते। निश्चय ही, एक मसीही के लिए, यह एक शत्रु है, जिसकी हार पूर्व निर्धारित थी। मसीह की सामर्थ से, मृत्यु को बाध्य किया गया है कि वह उद्धार पाए हुए लोगों के लिए प्रभु के सामने उपस्थिति में द्वारपाल के रूप में सेवा करे। परन्तु, फिर भी यह है एक शत्रु ही। यह शत्रु महलों और झोंपड़ियों में एक समान घुस सकता है। यह पति को पत्नी से जुदा कर देती है। यह मां की गोद से छोटे बच्चे को छीन लेती है। यह आनन्द को गहरे शोक में बदल देती है।

किसी प्रिय की मृत्यु पर, लोग विनती करते हैं, ''कोई बात करो जिससे हमें तसल्ली मिले।'' वह बात कहां से आए? साहित्य से? किसी कवि से? किसी दार्शनिक से? अपनी बड़ी-बड़ी पुस्तकें खोज लें, परन्तु मृत्यु के घर में घुस आने पर आपको नश्वर मनुष्य की लिखी एक पंक्ति भी नहीं मिलेगी जो आपको स्थायी तसल्ली और आशा दे सके। केवल एक ही स्रोत है जो सामर्थ और सांत्वना के वचन दे सकता है: बाइबल। परमेश्वर की इस पुस्तक में आप ऐसे और वचन पढ़ सकते हैं:

> चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तो भी हानि से न डरूंगा; तेरे सोटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है (भजन संहिता

23:4)।

> परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें पहिला फल हुआ।
>
> ... और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि ''जय ने मृत्यु को निगल लिया'' (1 कुरिन्थियों 15:20-54)।
>
> तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो (1 थिस्सलुनीकियों 4:17, 18)।
>
> और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और उसके बाद मृत्यु न रहेगी; और न शोक, न - विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं (प्रकाशितवाक्य 21:4)।

युगों से, इन शब्दों ने- और बाइबल में से ऐसे अन्य शब्दों ने- आंसू सुखाए हैं, आशा दी है, लाखों करोड़ों को सांत्वना दी है। सचमुच यह अद्‌भुत पुस्तक है।

सारांश

हमने बाइबल के सात अजूबों पर ध्यान दिया है: यह पुरानी है, परन्तु सदैव नई लगती है। यह विविध है, परन्तु एकता के साथ। एकता जो यीशु में केन्द्रित है। इसका प्रभाव शक्तिशाली है, परन्तु सांत्वना देने के लिए यह बड़ी ही कोमल है। बाइबल परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से दिया गया वचन है; इससे बढ़कर कोई और व्याज़्या इसके लिए नहीं दी जा सकती।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ *230 पर)*

1. 2 तीमुथियुस 3:16 में प्रयुक्त शब्द ''परमेश्वर की प्रेरणा'' से, का क्या अर्थ है
2. रोमी सम्राट डियोक्लेशियन ने पवित्र शास्त्र और इसके संदेश को समाप्त कर देना चाहा। क्या वह सफल हुआ ?
3. लैव्यव्यवस्था 13:45 बाइबल की प्रासंगिकता को कैसे दिखाता है ?
4. बाइबल के अपने अन्दर की विभिन्नताएं कैसे प्रमाणित करती हैं कि यह परमेश्वर की ओर से है ?
5. बाइबल का विषय क्या है ?
6. संसार के पुस्तकालयों की समस्त रचनाओं में से किस पुस्तक ने मनुष्य को सबसे अधिक प्रभावित किया है ?
7. बाइबल अपने पाठक को क्या सांत्वना देती है ?
8. बाइबल के उन सात अजूबों की सूची बनाइए जो प्रमाणित करते हैं कि यह परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से दिया गया वचन है।